

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी ।  
 किसी के हाथ आयुध है, किसी को नार भाती है ॥२॥  
 जगत के देव हठग्राही, कुनय के पक्षपाती हैं ।  
 तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती हैं ॥३॥  
 मुझे कुछ चाह नहीं जग की, यही है चाह स्वामी जी ।  
 जपूँ तुम नाम की माला, जो मेरे काम आती है ॥४॥  
 तुम्हारी छवि निरख स्वामी, निजातम लौ लगी मेरे ।  
 यही लौ पार कर देगी, जो भक्तों को सुहाती है ॥५॥

(३)

मेरे मन-मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान् । टेक ॥  
 भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर ।  
 निशि-दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान् ॥१॥  
 सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते ।  
 गाते सब तेरा यशगान, पधारो महावीर भगवान् ॥२॥  
 जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया ।  
 तुम हो दयानिधि भगवान्, पधारो महावीर भगवान् ॥३॥  
 भगत जनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें ।  
 कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान् ॥४॥  
 आये हैं हम शरण तिहारी, भक्ति हो स्वीकार हमारी ।  
 तुम हो करुणा दयानिधान, पधारो महावीर भगवान् ॥५॥  
 रोम-रोम पर तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा ।  
 रवि-शशि तुम से ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान् ॥६॥

(४)

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शान्ति अपार । टेक ॥  
 चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार ।  
 पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार ॥  
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥१॥

हस्त-युगल जिनवर कहें, पर का कर्ता होय ।  
 ऐसी मिथ्याबुद्धि से ही, भ्रमण चतुरगति होय ॥  
 यातैं पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥२॥  
 लोचन द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार ।  
 पर दुःखमय गति चतुर में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार ॥  
 यातैं नाशादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥३॥  
 अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरशाय ।  
 जिनदर्शन कर निजदर्शन पा, सत्गुरु वचन सुहाय ॥  
 यातैं अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर, झलके शान्ति अपार ॥४॥

(५)

आओ जिन मंदिर में आओ,  
 श्री जिनवर के दर्शन पाओ ।  
 जिन शासन की महिमा गाओ,  
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥टेक॥  
 हे जिनवर तव शरण में, सेवक आया आज ।  
 शिवपुर पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज ॥  
 प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ,  
 चहुँगति दुःख से शीघ्र छुड़ाओ ।  
 दिव्य-ध्वनि अमृत बरसाओ ।  
 आया-प्यासा मैं सेवक आनन्द का ॥१॥  
 जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय ।  
 मोहमहातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय ॥  
 शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ ।  
 निर्मल भेद-ज्ञान प्रकटाओ ।  
 अब विषयों से चित्त हटाओ,  
 पाओ-पाओ रे मारग निर्वाण का ॥२॥